2019

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
अर्थशास्त्र	1 4 0	हिन्दी

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक 319- 1615589

परीक्षार्थी का रौल नम्बर

अंकों में: X 2 9 7 7 2 5 5 7 3

शब्दों में: दो नौ सात सात दो पाँच पाँच सात तीन

उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 02 शब्दों में दो

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 04

ग :– परीक्षा का दिनांक 20 03 19

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी सर्टि.परीक्षा
केन्द्र क्र. 771002

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
V.K. Shrivastava	

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
	D.K. Pandey V Adhyapak G.H.S.S. Tiyara Valuer No..... 1912078

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में	कुल प्राप्तांक अंकों में
नब्बे	

No Change

2

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 2 के अंक	=	कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्र॰1 - उत्तर

अ) i) व्यक्तिगत इकाई

ब) ii) स्थानापन्न वस्तुएँ

स) ii) पूर्ति

द) iii) परिवर्तनशील लागतें शून्य हो जाती हैं

इ) iii) माँग तथा पूर्ति दोनों के द्वारा

प्र॰2 - उत्तर

अ) एकाधिकार व एकाधिकृत में कीमत विभेद हो सकती है।

ब) अंतिम

स) प्रो॰ कीन्स ने

द) कम होने (गिरने)

ई) मजदूरी दर में

③ [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ　　पृष्ठ 3 के अंक　　कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्र॰ 4 उत्तर　सही जोड़ी

	उत्तर
अ) लोचदार विनिमय दर	iv) ~~स्वतंत्र प्रणाली~~ माँग एवं पूर्ति शक्तियों द्वारा
ब) विदेशी विनिमय दर	v) ~~माँग तथा पूर्ति शक्तियों द्वारा~~ सरल प्रणाली
स) अधिकतम लाभ	i) डॉल्टन
द) करारोपण नियम	ii) समानता का नियम
इ) बजट प्राप्तियां	iii) राजस्व प्राप्तियाँ + पूँजीगत प्राप्तियाँ

प्र॰ 3 उत्तर　सत्य / असत्य

अ) सत्य

ब) सत्य

स) असत्य

द) असत्य

ई) सत्य

प्रश्न क्र.

प्र० 5 → उत्तर

अ) बजट प्राप्तियाँ - राजस्व प्राप्तियाँ + पूँजीगत प्राप्तियाँ
सार्वजनिक व्यय - राजस्व व्यय + पूँजीगत व्यय

ब) 1 अप्रैल से 31 मार्च तक

स) विस्तार = अधिकतम मूल्य - न्यूनतम मूल्य

द) गुणक - 100 होता है व आधार वर्ष को शून्य माना जाता है।

इ) फिशर का निर्देशांक = $\sqrt{\frac{\Sigma p_1 q_0}{\Sigma p_0 q_0} \times \frac{\Sigma p_1 q_1}{\Sigma p_0 q_1}} \times 100$

~~द) निर्देशांक का आधार वर्ष 100 होता है व इसे चालू वर्ष के शून्य की म संदर्भ~~

B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

उत्तर- 6

~~वस्तु~~ किसी निश्चित समय पर ~~वस्~~ किसी वस्तु विशेष का उत्पादन करने के लिए एक उत्पादक को जो भी कुल राशि का व्यय करना पड़ता है। वह लागत कहलाती है।

$$TC = VC + FC$$

[कुल लागत = परिवर्तनशील लागत + स्थिर लागत]

उत्तर - 7

एक वर्ष की अवधि में किसी देश की भौगोलिक सीमा में उत्पन्न सभी अंतिम वस्तुओं के मूल्य का योग सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।
यह ~~एक~~ सकल राष्ट्रीय उत्पाद की तुलना में संकुचित अवधारण है।

$$GDP_{(mp)} = (P \times Q) + (P \times S)$$

↑ सकल घरेलू उत्पाद

P = कीमत Q = मात्रा S = सेवाएँ

$$GDP_{(FC)} = GDP_{(mp)} - IT + S$$

B S E

प्रश्न क्र.

8

उत्तर 8

प्र जिस बिन्दु पर समग्र माँग, समग्र पूर्ति के बराबर होती है वह बिन्दु प्रभावपूर्ण माँग कहलाता है। प्रभावपूर्ण माँग के द्वारा ही रोजगार के स्तर का निर्धारण होता है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन कीन्स ने किया था।

A प्रभावपूर्ण माँग => AD = AS

Bg S E

उत्तर - 9

प्रामाणिक मुद्रा धातु मुद्रा का एक प्रकार है। प्रामाणिक मुद्रा वह मुद्रा होती है जिसमे धातु में अंकित मूल्य उसके यथार्थ मूल्य के बराबर होता है। यह देश की प्रधान मुद्रा होती है।

→ यह असीमित विधिग्राह्य मुद्रा होती है।

10

उत्तर - 10

प्रो० होरेस के अनुसार - "निर्देशांक एक संख्यात्मक माप है जिसमें समय व स्थान के आधार पर किसी चर मूल्य या सम्बन्धित चर मूल्य मे होने वाले परिवर्तनो की तुलना की जाती है।"

$$P_{01} = \frac{\Sigma P_1}{\Sigma P_0} \times 100$$

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 7 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर-11

11 स्थिर लागत व परिवर्तनशील लागत दोनों कुल लागत की अवधारणाएँ हैं।

$$TC = FC + VC$$

स्थिर लागत व परिवर्तनशील लागत में निम्न आधार पर अंतर किया जा सकता है।

स्थिर लागत	परिवर्तनशील लागत
1. स्थिर लागते वे लागते होती है जो उत्पादन के स्थिर साधनों पर व्यय की जाती है - जैसे - भूमि, बीमा, आदि	1. परिवर्तनशील लागते वे लागते होती हैं जो उत्पादन के परिवर्तनशील साधनो पर व्यय की जाती हैं - जैसे - कच्चा माल
2. जब उत्पादन नहीं होता तब भी स्थिर लागतो का वहन करना पड़ता है।	2. जब उत्पादन नहीं होता तब परिवर्तनशील लागत शून्य होती है।
3. यह अल्पकाल में स्थिर रहती है। उत्पादन कम या बढ़ने पर भी ये स्थिर रहती है।	यह अल्पकाल में परिवर्तित होती रहती है। उत्पादन बढ़ने पर बढ़ जाती है व कम होने पर कम हो जाती है।
4. $FC = TC - VC$	$VC = TC - FC$

दीर्घकाल में स्थिर लागते भी परिवर्तनशील हो जाती हैं।

8 | योग पूर्व पृष्ठ | + | पृष्ठ 8 के अंक | = | कुल अंक

प्रश्न क्र. 12

प्र०12 - उत्तर

माँग की लोच यह बताती है कि कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप माँगी गयी मात्रा की दर में कितना परिवर्तन हो रहा है।

प्रो॰ मार्शल के अनुसार → "माँग की लोच यह बताती है कि किसी निश्चित समय पर वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से उसकी माँगी गयी मात्रा में कम कमी होती है या अधिक व कीमत में कमी होने पर माँगी गयी मात्रा में अधिक वृद्धि होती है या कम।"

माँग की लोच के प्रकार

- माँग की कीमत लोच
- माँग की आड़ी लोच
- माँग की आय लोच

सूत्र :-

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँगी गयी मात्रा में अनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में अनुपातिक परिवर्तन}}$$

$$\Rightarrow \frac{\frac{\Delta Q}{Q}}{\frac{\Delta P}{P}}$$

$$\Rightarrow \frac{\Delta Q}{Q} \div \frac{\Delta P}{P}$$

प्रश्न क्र.

$$\text{मांग की लोच} = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

प्र० - 13 का | उत्तर - (अथवा)

13

माध्य विचलन ~~अंक~~ अपकिरण की माप की महत्त्वपूर्ण माप है।

$$\delta = \frac{\Sigma |dx|}{N}$$

माध्य विचलन के गुण

- (1) आसान विधि
- (2) विभिन्न माध्य से ज्ञात
- (3) चरम मूल्यों से कम प्रभावित

(1) माध्य विचलन अपकिरण की एक असान माप है इसे समझा बहुत आसान है।

(2) माध्य विचलन को किसी भी माध्य - ~~का~~ समान्तर माध्य, माध्यिका, बहुलक से ज्ञात किया जाए सकता है।

(3) अपकिरण की अन्य मापो की अपेक्षा यह चरम मूल्यो से कम प्रभावित होती है।

(4) इससे श्रेणी के बारे में यथेष्ट जानकारी प्राप्त हो जाती है।

SECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

8 प्रश्न - उत्तर

आज के आर्थिक जगत मे किसी भी अर्थव्यवस्था का अध्ययन निर्देशांक के बिना नहीं किया जा सकता है।

निर्देशांक के महत्व
- (1) जीवन-निर्वाह लागत निर्देशांक
- (2) आर्थिक नीति निर्धारण मे सहायक
- (3) उत्पादको के लिए महत्व
- (4) तुलनात्मक अध्ययन

B
S
E

(1) आर्थिक नीति निर्माण मे सहायक → निर्देशांक के द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रो का अध्ययन करके आर्थिक नीतियो का निर्माण किया जा सकता है।

(2) जीवन निर्वाह लागत निर्देशांक → इस निर्देशांक की मदद से सरकार को यह ज्ञान हो जाता है कि कीमत मे वृद्धि का ~~किस~~ मजदूरो के रहन-सहन व जीवन स्तिर मे क्या प्रभाव पड़ रहा है।

(3) उत्पादको के लिए महत्व → उत्पादक निर्देशांक का अध्ययन करके अपने उत्पादन लागत को कम करने की कोशिश करते हैं।

(4) तुलनात्मक अध्ययन → आय निर्देशांक द्वारा विभिन्न देशो की अर्थव्यवस्था की तुलना की जाती है।

प्रश्न क्र.

प्र०15 का उत्तर (अथवा)

व्यष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत कीमत, मजदूरी, आय व विशिष्ट फर्म, विशिष्ट परिवार का अध्ययन होता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएँ निम्न लिखित हैं :-

विशेषताएँ
- → i) व्यक्तिगत इकाई का अध्ययन
- → ii) छोटे भाग का अध्ययन
- → iii) पूर्ण रोजगार की मान्यता
- → iv) कीमत सिद्धांत

i) व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन → व्यष्टि अर्थशास्त्र मे व्यक्तिगत इकाईयों का अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र मे व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन करना महत्त्वपूर्ण होता है। समष्टि अर्थशास्त्र जहाँ समग्र अर्थव्यवस्था का अध्ययन है वहीं व्यष्टि अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था के एक भाग का अध्ययन है।

ii) छोटे भाग का अध्ययन → व्यष्टि अर्थशास्त्र में अर्थव्यवस्था के छोटे भाग का अध्ययन किया जाता है। सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र में नहीं किया जाता।

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 12 के अंक	=	कुल अंक

प्रश्न क.

iii) पूर्ण रोजगार की मान्यता → व्यष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन करते समय अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति मानी जाती है।

iv) कीमत सिद्धांत → व्यष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत पूर्ण रोजगार की मान्यता के कारण सबसे बड़ी समस्या वस्तुओं की कीमतों की होती है। अतः कीमत सिद्धांत का विश्लेषण व्यष्टि अर्थशास्त्र में किया जाता है।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर ही व्यष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन किया जाता है। कीमत सिद्धांत का विश्लेषण व्यष्टि अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषता है।

उत्तर-16 (अथवा)

प्रतियोगिता के आधार पर बाजार

- पूर्ण प्रतियोगिता
- एकाधिकार
- अपूर्ण प्रतियोगिता
  - एकाधिकृत
  - अल्पाधिकार
  - द्वयाधिकार

B
S
E

13 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 13 के अंक | कुल अंक

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

पूर्ण प्रतियोगिता व एकाधिकार में अंतर निम्न बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है :-

पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार
1. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में कई विक्रेता होते हैं। उनका पूर्ति में पूर्ण नियंत्रण नहीं होता है।	1. एकाधिकार बाजार में वस्तु का एक ही विक्रेता होता है। उसका पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण होता है।
2. पूर्ण प्रतियोगित में फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश व बाहिर्गमन होता है।	2. एकाधिकार प्रतियोगिता मे फर्मों के प्रवेश मे कई रूकावटे होती है।
3. पूर्ण प्रतियोगिता में माँग वक्र पूर्णतया लोचदार होता है।	3. एकाधिकार प्रतियोगिता मे माँग वक्र पूर्णतया बेलोचदार होता है।
4. पूर्ण प्रतियोगित में फर्म कीमत ग्रहण करने वाली होती है।	4. एकाधिकार में फर्म कीमत निर्धारण करने वाली होती है।
5. कीमत विभेद नहीं होती।	5. कीमत विभेद हो सकती है।

पूर्ण प्रतियोगिता व एकाधिकार दोनो ही काल्पनिक बाजार की दशाएँ हैं।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र. प्र०17 - उत्तर

व्यापारिक बैंक वे बैंक होती हैं जो रिजर्व बैंक की द्वितीय सारणी में इण्डियन एक्ट को बैंकिंग के आधार अनुसार सम्मिलित होती हैं।
व्यापारिक बैंक - PNB, बैंक ऑफ बड़ौदा आदि

व्यापारिक बैंक के महत्त्व

महत्त्व
- → (1) व्यापार व उद्योग में महत्त्व
- → (2) ग्राहको के लिए महत्त्व
- → (3) पूंजी को गतिशीलता प्रदान करना
- → (4) धन की सुरक्षा
- → (5) मुद्रा को लोच प्रदान करना

B
S
E

(1) व्यापार व उद्योग में महत्त्व → व्यापारिक बैंको व्यापारियो व उद्यमियो के लिए बहुत महत्त्व है। व्यापारिक बैंक उनको ऋण प्रदान करती है क्योकि उद्योगो में पूजी के क्रय के लिए ऋण की आवश्यकता पड़ती है।

(2) ग्राहको के लिए महत्त्व → व्यापारिक बैंक ग्राहको की जमा स्वीकार करता है। बैंक अपने ग्राहको को अभिकर्ता सम्बन्धी सलाह देता है। उनको व्यापारिक सलाह भी दी जाती है।

15

[ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 15 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

(3) पूंजी को गतिशीलता प्रदान करना → व्यापारिक बैंक ग्राहको की जमाओ का कुछ अनुपात रख के बाकि जमा से साख का सृजन करता है। इस प्रकार व्यापारिक बैंक पूजी को गतिशीलता प्रदान करती है।

(4) धन की सुरक्षा → व्यापारिक बैंक द्वारा ग्राहको की बचत को जमा किया जाता है। व ये बैंक अपने ग्राहको को लॉकर की सुविधा प्रदान करते है, जिससे वे अपने आभूषण व महत्त्वपूर्ण दस्तावेज रख सके व वे सुरक्षित रहे।

अतः- उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकता है कि व्यापारिक बैंको का इस आर्थिक धरातल में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

उत्तर- 18 (अथवा)

स्थिर विनिमय दर - स्थिर विनिमय दर का अर्थ है विदेशी विनिमय दर मे कोई बदलाव नहीं होना। स्थिर विनिमय दर का निर्धारण सरकार द्वारा किया जाता है।

स्थिर विनिमय दर के विपक्ष में तर्क

(1) नियंत्रित अर्थव्यवस्था → स्थिर विनिमय दर के कारण एक देश की अर्थव्यवस्था में कड़े कानून लगाये जाते है। जिनका पालन करना आवश्यक होता है नहीं तो विनिमय दर में लोच आ जाती है।

प्रश्न क्र. (2) राष्ट्रीय आय पर ध्यान नहीं → स्थिर विनिमय दर की स्थिति में एक अर्थव्यवस्था का प्राथमिक कार्य उसे बनाये रखना होती है। इस दशा मे राष्ट्रीय आय, पूर्ण रोजगार, उत्पादन मे वृद्धि आदि गौण कार्य हो जाते हैं।

(3) भ्रष्टाचार → नियंत्रित अर्थव्यवस्था होने के कारण देश मे भ्रष्टाचार जैसी गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। उससे देश की अर्थव्यवस्था मे बुरा असर पड़ता है।

B (4) विनिमय दर ~~का~~ मे आकस्मिक परिवर्तन → विनिमय दर मे आकस्मिक
S परिवर्तन हो जाने से विदेशी व्यापारियो को हानि उठानी
E पड़ती है। विनिमय दर देश के विपक्ष मे हो जाता है।

उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकता है कि स्थिर विनिमय दर का अर्थव्यवस्था मे बुरा असर पड़ता है। परन्तु स्थिर विनिमय दर के लाभ भी अधिक है।

प्र० 19 उत्तर

प्रत्यक्ष कर → प्रत्यक्ष कर वह होता है जिसमे कराघात व करापात एक ही व्यक्ति होता है।

अप्रत्यक्ष कर → अप्रत्यक्ष कर वह कर होता है जिसमे कराघात व करापात दो अलग-अलग व्यक्ति होते हैं।

प्रत्यक्ष कर	अप्रत्यक्ष कर
1. प्रत्यक्ष कर का भुगतान उसी व्यक्ति को करना पड़ता है जिस पर ये लगाया जाता है।	अप्रत्यक्ष कर का भुगतान दूसरे व्यक्ति के द्वारा किया जाता है।
2. प्रत्यक्ष कर देश की आर्थिक असमानताओं को कम करने में सहायक होता है।	अप्रत्यक्ष कर देश की आर्थिक असमानताओं को कम करने में सहायक नहीं होता है।
3. प्रत्यक्ष कर से नागरिक चैतन्यता में वृद्धि होती है।	अप्रत्यक्ष कर से नागरिक चैतन्यता में वृद्धि नहीं होती।
4. प्रत्यक्ष कर का सबसे बड़ा दोष - कर चोरी है।	अप्रत्यक्ष करों की चोरी करना सम्भव नहीं है।
. यह लोचदार होती है।	यह कम लोचदार होती है।

अतः अप्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष कर दोनो अर्थव्यवस्था व देश के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रत्यक्ष कर - निगम कर, आय कर, उपहार कर
अप्रत्यक्ष कर - उपहार कर, बिक्री कर, मनोरंजन कर

(18) [ ] + [ ] = [ ]

कुल अंक

प्रश्न क्र. प्र०२० > उत्तर -

दो समंक श्रेणियो या व समंक समूहो के बीच का कार्यकारिणीय सम्बन्ध ही सह-सम्बन्ध कहलाता है।

सहसम्बन्ध के प्रकार

- → धनात्मक व ऋणात्मक सहसम्बन्ध
- → रेखीय व अरेखीय सहसम्बन्ध
- → सरल, आंशिक व बहुगुण सह-सम्बन्ध

धनात्मक सहसम्बन्ध → जब दो समंक श्रेणियो के बीच समान दिशा से परिवर्तन हो वहां धनात्मक सहसम्बन्ध होता है, अर्थात् एक समंक श्रेणी मे वृद्धि या कमी होने से दूसरी समंक श्रेणी मे भी वृद्धि या कमी हो।

ऋणात्मक सहसम्बन्ध → जब दो समंक श्रेणियो के बीच विपरीत दिशा मे परिवर्तन हो तो वहाँ ऋणात्मक सहसम्बन्ध होता है अर्थात् एक समंक श्रेणी मे वृद्धि या कमी होने से दूसरी समंक श्रेणी मे कमी या वृद्धि हो तो वहा ऋणात्मक सहसम्बन्ध होता है।

मध्यप्रदेश

प्र०२१ -> उत्तर (अथवा)

स्पियरमैन के द्वारा कोटी अंतर सहसम्बन्ध गुणांक का प्रतिपादन किया गया।

$$\text{स्पियरमैन का सह-सम्बन्ध} = 1 - \frac{6\Sigma D^2}{N(N^2-1)}$$

स्पियरमैन के कोटी अंतर सहसम्बंध के गुण

(1) ~~स्पियमैन~~ स्पियरमैन की कोटि अंतर रीति कार्ल पियरसन की सहसम्बन्ध की रीति से आसान है।

(2) स्पियरमैन की रीति से अभौतिक तत्वो जैसे बुद्धित्व, ता, जैसी अभौतिक तत्वो को ज्ञात किया जा सकता

पियरमैन की रीति का उस समय भी प्रयोग किया जा सकता है जब श्रेणी के मूल्य न दिये हो। अगर श्रेणी के क्रमान्तर भी दिये होते है तो इसकी गणना असानी से की जा सकती है।

(4) स्पियरमैन की ~~विधि~~ रीति से दो समंक श्रेणी या दो से अधिक समंक श्रेणियो के सम्बन्ध को भी ज्ञात किया जा सकता है।

(5) स्पियरमैन की रीति को समझने के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रश्न क्र. प्र० २२ → उत्तर

माँग की लोच यह बताती है कि कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप माँग की दर में कितना परिवर्तन होता है।

माँग की कीमत लोच $= \frac{\Delta q}{\Delta p} \times \frac{p}{q}$

पूर्णतया लोचदार माँग

जब वस्तु की कीमत में सूक्ष्म या कोई परिवर्तन न होने पर भी वस्तु की माँगी गयी मात्रा में अत्यधिक परिवर्तन हो जाता है। ऐसी माँग की स्थिति को पूर्णतया लोचदार माँग कहेंगे।

→ पूर्णतया लोचदार माँग एक काल्पनिक स्थिति है।

रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शन

कीमत प्रति इकाई कीमत	माँग
10	20
10	30
10	40

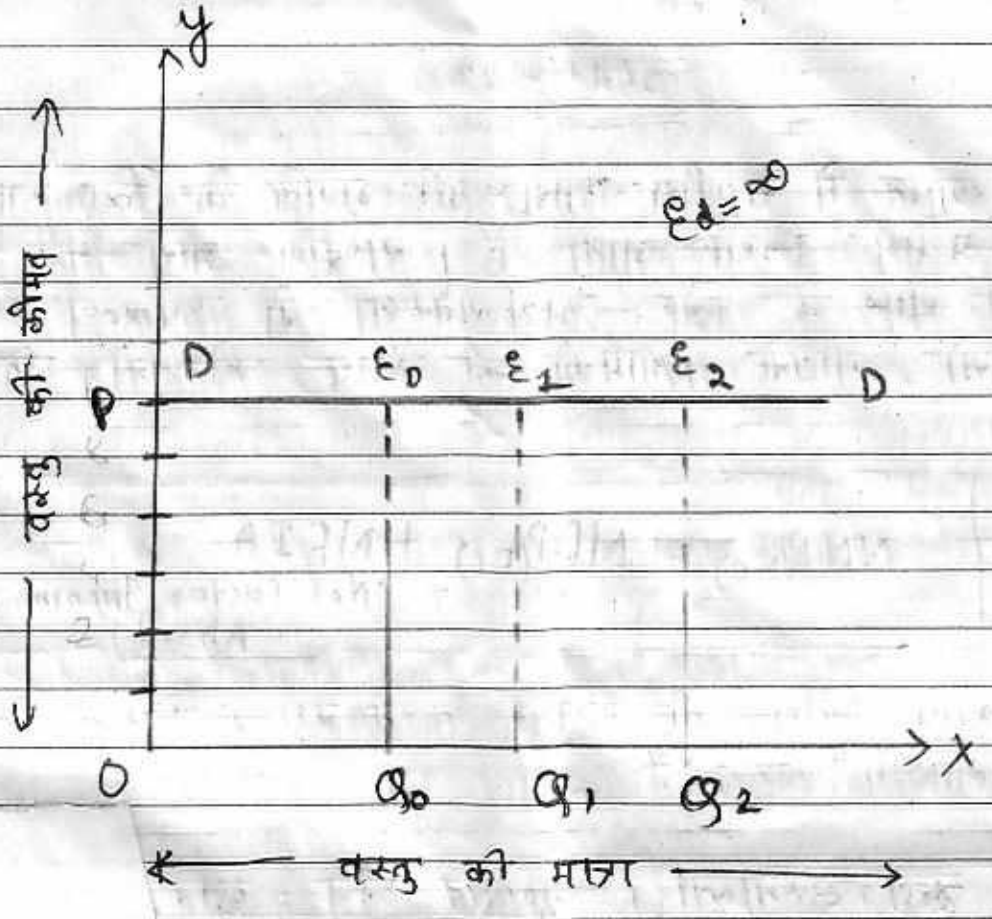

रेखाचित्र मे OX अक्ष में वस्तु की मात्रा ली है व OY अक्ष मे वस्तु की कीमत। जब वस्तु की कीमत OP थी तब वस्तु की माँगी गयी मात्रा OQ_0 थी। कीमत मे परिवर्तन न होने पर भी वस्तु की माँगी गयी मात्रा OQ_0 से OQ_1 व OQ_1 से OQ_2 हो जाती है।

अतः - $E_d = \infty$ यह अवास्तविक दशा है।

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र. उत्तर - 23

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना के लिए आय विधि का प्रयोग किया जाता है। राष्ट्रीय आय की गणना करने ~~आय~~ के लिए अर्थव्यवस्था में उपलब्ध सभी कर्मचारियो, साधनो ~~श्रमिको~~ की आय को जोड़ दिया जाता है।

$$NNP_{(FC)} = NDP_{(FC)} + NFIA$$
(Net factor Income from Abroad).

आय विधि की गणना करते समय निम्न लिखित सावधानियाँ जरूरी है :-

① ~~स्था~~, हस्तान्तरित भुगतान जैसे - छात्रवृत्ति, बेरोजगारी भत्ता, महंगाई भत्ता आदि को राष्ट्रीय आय विधि मे सम्मिलित नहीं किया जाता है।

② निगम कर में लाभ का अंश होता है। अतः इसे राष्ट्रीय आय की गणना करते समय नहीं जाता है।

③ वह मात्रा जो एक उपभोक्ता स्व-उपभोग के लिए रखता है। उसे भी राष्ट्रीय आय में सम्मिलित किया जाता है।

④ ~~व~~ ~~स्वयं~~ वह भू-स्वामी जो अपनी भूमि का उपयोग खुद की आवश्यकता की पूर्ति के लिए करता है उस भूमि का आरोपित किराया भी राष्ट्रीय आय मे जोड़ा जाता है।

B
S
E

प्रश्न क्र.

(5) गैर-कानूनी कार्यों से उत्पन्न आय को राष्ट्रीय आय में सम्मिलित नहीं किया जाता है। परन्तु दलालों की को मिलने वाली आय को राष्ट्रीय आय की गणना में शामिल किया जाता है।

6) वे व्यक्ति जो खुद की भूमि का उपयोग करके, खुद पूंजी लगाते हैं व खुद को रोजगार प्रदान करते हैं -मोची आदि की आय मिश्रित आय के रूप में गणना हेतु प्रयुक्त की जाती है।

उपर्युक्त सावधानियों को ध्यान में रखकर ही राष्ट्रीय आय की गणना का आकलन आय विधि से करना चाहिए।

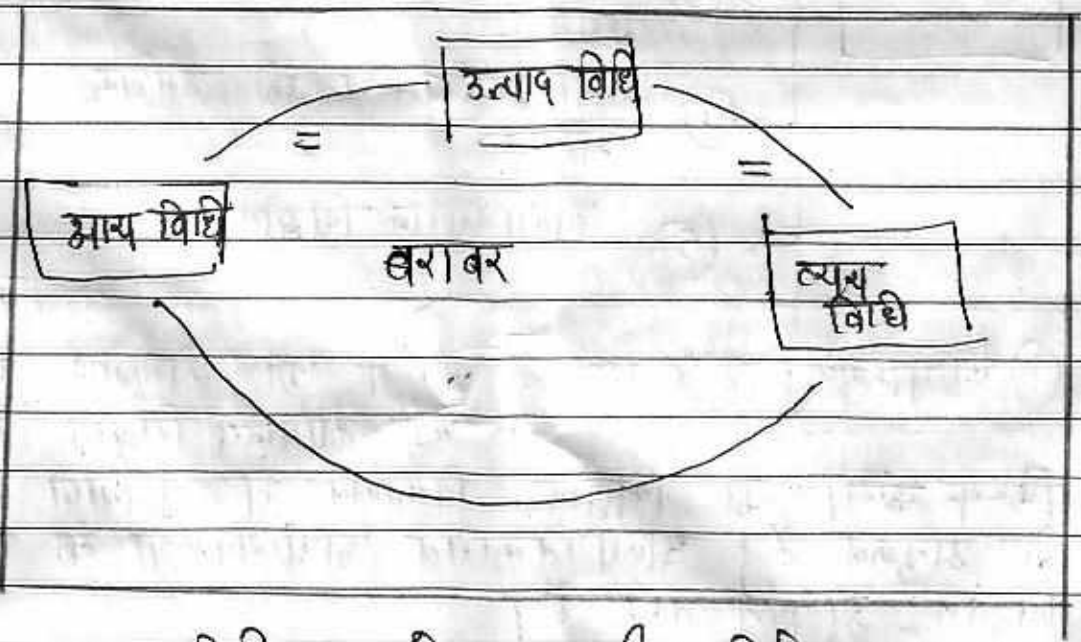

आय विधि = वेतन, मजदूरी + मिश्रित आय + स्वउपभोग + ब्याज + आरोपित किराया + प्रत्यक्ष कर + विदेशों से प्राप्त विशुद्ध आय

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

उत्तर - २५

~~क~~ 1936 मे अर्थशास्त्र में क्रांति के स्वरूप एक पुस्तक आयी जिसकी रचना प्रो. कीन्स ने की थी। प्रो. कीन्स ने प्रभावपूर्ण माँग को बहुत अधिक महत्व दिया है। परन्तु कीन्स का रोजगार सिद्धांत भी आलोचना से परे नही है।

आलोचना
- (1) सामान्य सिद्धांत नहीं
- (2) अवास्तविक मान्यताओ पर आधारित
- (3) बेरोजगारी का अपूर्ण ज्ञान
- (4) प्रभावपूर्ण माँग को अधिक महत्व
- (5) अल्पकालीन सिद्धांत

B
S
E

(1) सामान्य सिद्धांत नहीं → कीन्स का रोजगार का सिद्धांत एक सामान्य सिद्धांत नही है ~~किन्स~~ कीन्स का सिद्धांत विकसित व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अनुकूल है। अल्प विकसित अर्थव्यवस्था के लिए यह सिद्धांत उपयुक्त नही है।

(2) अवास्तविक मान्यताएँ → कीन्स का रोजगार सिद्धांत अवास्तविक मान्यताएँ जैसे पूर्ण प्रतियोगिता व बन्द अर्थव्यवस्था पर आधारित है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
Economics	1 5 0	हिन्दी	20 03 19

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हाई स्कूल सर्टि. परीक्षा

केन्द्र क्र. 771002

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक.................................तक कुल प्राप्तांक

(3) प्रभावपूर्ण माँग को अधिक महत्व - कीन्स ने प्रभावपूर्ण माँग को ही रोजगार के ~~स्थर~~ स्तर का निर्धारक माना है जबकि मजदूरी की दर व अन्य तत्व भी रोजगार के स्तर का निर्धारण करते है।

(4) बेरोजगारी का अपूर्ण ज्ञान → कीन्स ने सिर्फ चक्रीय बेरोजगारी पर ध्यान दिया है। तकनीकी व घर्षणात्मक बेरोजगारी पर ध्यान नहीं दिया है। अतः यह सिद्धांत बेरोजगारी का अपूर्ण ज्ञान पर आधारित है।

(5) अल्पकालीन सिद्धांत → कीन्स का सिद्धांत अल्पकालीन है। यह दीर्घकालीन समस्याओ के विषय मे जानकारी नहीं प्रदान करता है। कीन्स ने समग्र पूर्ति को समग्र माँग से कम महत्व दिया है। रोजगार के स्तर मे वृद्धि समग्र माँग को बढ़ाकर की जा सकती है।

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न क्र.

कीन्स का रोजगार सिद्धांत

MN → श्रमिक बेरोजगार सिर्फ OM श्रमिकों को ही रोजगार मिला है

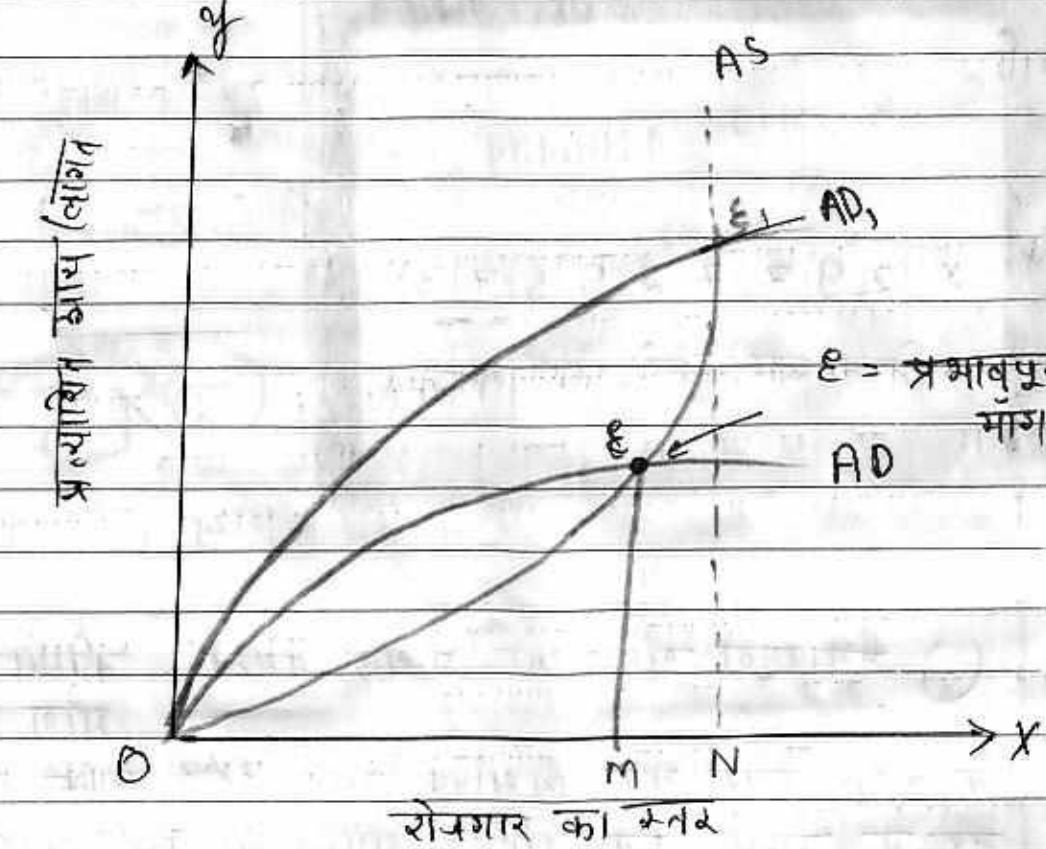

प्रस्तुत रेखाचित्र कीन्स के सिद्धांत पर अधारित है। E बिन्दु प्रभावपूर्ण माँग है परन्तु इस स्थिति में भी MN श्रमिक बेरोजगार होते हैं।

अतः कीन्स का सिद्धांत भी आलोचना से परे नहीं है। परन्तु यह सिद्धांत परम्परावादी सिद्धांत से उत्तम है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर → 25

बजट हर अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए महत्वपूर्ण है। बजट में सार्वजनिक प्राप्तियों व व्ययो का समायोजन होता है। बजट की उत्पत्ति फ्रांसिसी शब्द ब्यूजे से हुई है।

बजट का महत्व →
- (1) हिसाबदेयता का उद्देश्य
- (2) आर्थिक नियंत्रण
- (3) प्रशासनिक कुशलता
- (4) आर्थिक विकास में सहायक
- (5) अन्य महत्त्व

(1) हिसाबदेयता का उद्देश्य → भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। प्रजातांत्रिक देश होने के नाते यहाँ की जनता को यह अधिकार है कि वो ये जाने की सार्वजनिक आय का सरकार किस प्रकार उपयोग कर रही है। अतः सरकार बजट को आम आदमी के लिए ही बनाती है।

(2) आर्थिक नियंत्रण → बजट से संसद सभी मंत्रालयो पर आर्थिक नियंत्रण रखती है। इससे सरकार के सभी मंत्रालय धन का अपव्यय नही करते। बजट के अभाव

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

में विभिन्न सरकारी मंत्रालय धन का उचित प्रयोग नहीं करते हैं।

(3) प्रशासनिक कुशलता → सरकार विभिन्न क्षेत्रो की आवश्यकता के अनुसार धन की ~~खूब~~ व्यय करती है। सबसे ज्यादा धन का व्यय रक्षा के क्षेत्र में किया जाता है। ~~कि~~ ~~ब~~ बजट के माध्यम से प्रशासनिक कुशलता में वृद्धि की जा सकती है।

(4) आर्थिक विकास → देश के आर्थिक विकास के लिये यह आवश्यक है कि ~~धन~~ का सार्वजनिक आय का व्यय विकासात्मक कार्यों के लिए हो जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि। बजट के द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि किस योजना में कितना व्यय करना है।

(5) अन्य महत्व → बजट के और भी कई महत्व हैं। बजट बनाकर सरकार अन्य क्षेत्रो का भी विकास करना चाहती है - जैसे -

(1) कृषि के क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाने के लिए अधिक राशि का व्यय किया जाता है।

(2) राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना भी बजट का प्रमुख उद्देश्य होता है।

(3) ~~औद्यिक~~ औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक।

19

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
Economics	1 4 0	हिन्दी	20 03 19

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी सर्टि.परीक्षा

हाई स्कूल सर्टि.परीक्षा

केन्द्र क्र.771002

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक..................................तक कुल प्राप्त

उपर्युक्त महत्त्व के कारण विश्व के सभी देश बजट का निर्माण करती है। ~~अ~~ आज विश्व आर्थिक विश्व में बदल गया है। जिसमे बजट का ~~स~~ निर्माण हर अर्थव्यवस्था के विकास के लिये किया जाता है।

B

S 26

E Solv

प्र० 26

विस्तार = L − S

L = अधिकतम मूल्य

S = न्यूनतम मूल्य

आँकड़ो के अनुसार

~~विस्तार~~ L = 50

S = 0

...के अंकों का योग

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

Putting value of L & S in formula

विस्तार = L - S

= 50 - 0

= 50

विस्तार = 50

विस्तार गुणांक = $\frac{L-S}{L+S}$

putting value of L & S in formula

विस्तार गुणांक = $\frac{50-0}{50+0}$

= $\frac{50}{50}$ = $\frac{1}{1}$

विस्तार गुणांक = 1

विस्तार = 50

विस्तार गुणांक = 1